International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 865-868

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 865-868
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2017
Accepted: 20-04-2017

रागिनी कुमारी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. कल्याणी कुमारी
सहायक प्राध्यापक, डॉ जाकिर . हुसैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रागिनी कुमारी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

संकुल संसाधन केन्द्र का शिक्षकों के शिक्षण दक्षता विकास में भूमिका

रागिनी कुमारी, डॉ. कल्याणी कुमारी

सारांश
जन शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए संकुल संसाधन केन्द्र कार्य कर रहा है। जिसमें विशेष रूप से शिक्षकों के पेशेवर विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। अपने ज़मीनी अनुभवों के आधार पर सी०आर०सी० का यह मानना है कि शिक्षकद-शिक्षिकाओं के अलगाव को ख़त्म करने और उनमें सहकार व एक-दूसरे से सीखने की क्षमता विकसित करने में सहायक मंच, शिक्षकों के पेशेवर विकास में एक सहभागिता पूर्ण एवं संघटित दृष्टिकोण का निर्माण करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। संकुल संसाधन केन्द्र (सीआरसी) और ब्लॉक संसाधन केन्द्र (बीआरसी), शैक्षणिक कार्यप्रणाली में सुधार के लिए शिक्षक–शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित करने के प्राथमिक उद्देश्य से केन्द्र प्रायोजित 'ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम' (डीपीईपी) के अन्तर्गत 1994 में शुरू किए गए थे। सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के अन्तर्गत इन केन्द्रों की अवधारणा को और व्यापक बनाते हुए इनमें शिक्षक–शिक्षिकाओं को सतत अकादमिक सहयोग देने की व्यवस्था भी शामिल की गई। इस रणनीति के अभिन्न हिस्से के तौर पर, सीआरसी समन्वयक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर महीने बैठकों का आयोजन करेंगे जहाँ उस संकुल की शिक्षक–शिक्षिकाएँ एक–दूसरे से संवाद कर सकें व कक्षा में सामने आने वाली चुनौतियों पर बातचीत कर सकें, और मिल जुलकर उनका समाधान खोज सकें। चूँकि ज़्यादातर समन्वय क प्रशासनिक कामों के बोझ तले दबे रहते हैं, इसलिए अकसर इन बैठकों को सिर्फ़ प्रशासनिक कामकाज और आँकड़े इकट्ठा करने जैसे व्यवहारिक मसलों तक ही सीमित रखा गया।

मुख्य शब्द : संकुल संसाधन केन्द्र, शिक्षक, शिक्षण दक्षता विकास

प्रस्तावना
संकुल साधन केन्द्र शिक्षा अधिकार अधिनियम के तहत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिले के सभी ब्लॉक, प्रखण्ड, संसाधन केन्द्र का निर्धारण किया गया है। धीरे–धीरे इस बात को पूरी दुनिया मान रही है कि शिक्षक–शिक्षिकाओं के पेशेवर विकास के लिए सहभागिता और मिल जुलकर सीखना ज़्यादा प्रभावकारी तरीक़े हैं। स्कूलों में सीखने–सिखाने के एक अधिक अर्थपूर्ण अनुभव के लिए विभिन्न सन्दर्भों एवं भौगोलिक स्थितियों में विविध युक्तियों को अपनाया जा रहा है, जिनसे ऐसे स्थान और मंचों को मुहैया करवाया जा सके जो काम के दौरान शिक्षक–शिक्षिकाओं को एक–दूसरे के साथ सम्पर्क में आने और उनके कार्यों के आत्मनिरीक्षण व उनमें सुधार हेतु अपने सामूहिक ज्ञान का उपयोग करने को प्रोत्साहित करते हों।

सीआरसी समन्वय कों और फ़ाउण्डेशन की विभिन्न मिलीजुली कोशिशों के चलते, इन बैठकों की दिशा, लहज़े और गुणवत्ता में धीरे–धीरे बदलाव आया। इनमें होने वाली चर्चाएँ धीरे–धीरे अकादमि कविषयों की तरफ मुड़ने लगीं, जैसे कि स्कूल के दौरे के अनुभवों को साझा करना, पुस्तकालय निर्माण व सुधार, शिक्षार्थियों का मूल्यांकन, और विशिष्ट विषयों व कक्षा से जुड़े सरोकार। फ़ाउण्डेशन के एक सदस्य याद करते हुए कहते हैं, "एक सत्र में 'भिन्न' पर चर्चा हो रही थी; इसमें पहली बार यह दिखा कि प्रतिभागी उसमें रुचि दिखा रहे थे और वे कुछ देर ज़्यादा बैठने को भी तैयार थे। यह वो मील का पत्थर था जो उस गुणवत्ता में तब्दील हुआ जो आज देखने को मिल ती है।" इसकी पुष्टि जोशियाड़ा के सीआरसी समन्वयक करते हैं, "शुरुआत में टीचर उपस्थिति तो दर्ज कराते थे, मगर वहाँ बैठते नहीं थे। धीरे–धीरे, जब बैठकों में कक्षा की चुनौतियों पर बात होने लगी तो वे बैठकों के प्रति ज़्यादा आकर्षित हुए और उनमें नियमित भाग लेने लगे। लेकिन यह सब एक झटके में नहीं हुआ। इसमें समय लगा और सबकी मिलीजुली कोशिशें लगीं।" इन परिचर्चाओं का स्वरूप भी बदला और यह मुख्यतः एकतरफ़ा लैक्चर की बजाय सहभागि तापूर्ण गतिविधियों में बदल गईं, जहाँ शिक्षक–शिक्षिकाएँ अपने–अपने अनुभव साझा करते थे और यहाँ तककि पेशेवर मसलों पर एक–दूसरे से असहमतियाँ भी ज़ाहिर करते थे। यह मंच ऐसे लोकतान्त रिक मंचों में बदलने लगे जहाँ विभिन्न नज़रिए को पर्याप्त जगह और सम्मान दिया जाता था।

सौहार्द्र और व्यक्ति गत जुड़ाव बनाना

यह ज़रूरी है कि सभी सीआरसी समन्वयकों और शिक्षक–शिक्षिकाओं के बीच आपसी विश्वास, सम्मान और समावेशन का सम्बन्ध स्थापित किया जाए। इसके लिए औपचारिक व अनौपचारिक परस्पर क्रियाकलापों की दीर्घकालिक व सतत प्रक्रियाओं की ज़रूरत होगी।

शिक्षा व्यवस्था में, जहाँ आमतौर पर परस्पर क्रियाकलाप की औपचारिक जगहें पदसोपानबद्ध होती हैं, वहाँ सहभागी तरीक़े से सीखने–सिखाने के लिए इस तरह का सम्बन्ध काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। एकबार आपसी विश्वास बन जाए और शिक्षक–शिक्षिकाएँ इसके फ़ायदों को समझने लगें तो वे अपने पेशेवर व्यवहार को सुधारने के लिए ख़ुद आगे आते हैं और मेहनत भी करते हैं। वे फ़ीडबैक भी सहजतापूर्वक स्वीकार करते हैं और किसी तरह का आधिकारिक दबाव न होने के बावजूद अपनी क्षमता का विकास करने के लिए काम करते हैं।

क्षमता व आत्मविश्वास का निर्माण

यह सुनिश्चित करने में कि संकुल–स्तरीय मासिक बैठकें शिक्षक–शिक्षिकाओं के पेशेवर विकास के मंच के रूप में काम कर सकें, सीआरसी समन्वयक की अहम भूमि का होती है। सीआरसी समन्वयकों की क्षमताएँ और उनकी अभिप्रेरणा इस मंच की प्रभावशीलता की कुंजियाँ हैं। समन्वय कों की व्यापक ज़िम्मेदारियों के मद्दे नज़र उनके सशक्तिकरण, समर्थ न और क्षमता निर्माण की ज़रूरत है ताकि यह केन्द्र अपनी अकादमिक ज़िम्मे दारियाँ पूरी कर सके। जैसा कि हमारे इस अनुभव से पता चला, क्षमता–निर्माण में समय लगता है और इसके लिए विविध तौर–तरीक़ों से लगातार काम करने की ज़रूरत होती है। सीआरसी समन्वय कों की क्षमता, अभिप्रेरणा और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए एक लम्बे समय से उनके साथ सघनता से काम कर रहा है। सीआरसी समन्वय कों की भूमि का और उनकी ज़िम्मेदारियों के स्वरूप पर कार्यशालाओं की श्रृंखला आयोजित की गई, जिससे इस काम की व्यापक समझ बनाने में काफ़ी मदद मिली। इसके अलावा, दृष्टिकोण, विषयवस्तु और शिक्षा पद्धति से सम्बन्धित मसलों पर भी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं ने शिक्षक–शिक्षिकाओं की सहायता करने के लिए समन्वयकों की अकादमिक क्षमता के विकास में मदद की। मासिक बैठकों में अकादमिक चर्चाओं के शुरू हो जाने के बाद इन सत्रों की योजना और संचालन के लिए नियमित समर्थन दिया, जो आज भी जारी है। यह समर्थन उन सदस्यों के ज़रिए दिया गया जो एजेण्डा बनाने, बैठक–पूर्व तैयारियाँ करने, शिक्षक–शिक्षिकाओं से सम्पर्क करने आदि में मदद करते हैं। शुरुआती दौर में फ़ाउण्डेशन के सदस्य सीआरसी समन्वय कों के साथ सत्रों का सह–संचालन भी करते थे। धीरे–धीरे, समन्वय कों ने इसकी पूरी ज़िम्मेदारी सम्भाल ली। इस तरह, सीआरसी समन्वयक की भूमिका के विभिन्न आयामों को समझने में एक समर्थक व्यवस्था की भूमि का महत्त्वपूर्ण रही।

संकुल-स्तरीय केन्द्र का उद्देश्य

संकुल–स्तरीय बैठकों के आयोजन व संचालन के लिए कुछ प्रक्रियाओं को स्थापित करना ज़रूरी है ताकि यह मंच सार्थक और उपयोगी ढंग से काम करे। संकुल–स्तरीय बैठकों का आयोजन पूर्व–निर्धारित तारीख़ों में किया जाता है, लेकिन किसी आकस्मिक घटना की स्थिति में इसमें बदलाव भी होता है। बैठक के एक या दो दिन पहले शिक्षक–शिक्षिकाओं को उसकी तारीख़ व चर्चा में शामिल विषयों की याद दिलाने की

ज़िम्मे दारी समन्वयक उठाते हैं और इसके लिए वे 'वॉट्सएप' या फ़ोन का इस्तेमाल करते हैं।

बैठकों का अकादमिक एजेण्डा भी पहले ही तैयार कर लिया जाता है। एजेण्डा का विकास इससे जुड़े सभी पक्षों की सहभागिता के आधार पर किया जाता है। अकादमिक वर्ष की शुरुआत में शिक्षक–शिक्षिकाएँ, समन्वयक मिल कर उस साल के पेशेवर विकास के लक्ष्यों को लेकर एक साझा नज़रिया विकसित करते हैं। यह एक सामान्य ख़ाका होता है, जिसमें इसका ज़िक्र होता है कि किस महीने कौन से विषय पर चर्चा होगी और उसके सत्रों के संचालन की ज़िम्मेदारी किनकी होगी। इस कैलेण्डर को बनाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि बैठकों के बीच विषयवस्तु की एक निरन्तरता बनी रहे और साथ ही विभिन्न विषयों व मुद्दों पर बराबर समय व ध्यान दिया जा सके।

किसी सत्र का ख़ास एजेण्डा बैठक के एक–दो दिन पहले सबके साथ साझा किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में, सीआरसी समन्वयक, शिक्षक–शिक्षिकाएँ बातचीत करके आपसी सहमति से एजेण्डा तय करते हैं। एजेण्डा को पहले से ही तय करने की प्रक्रिया से शिक्षक–शिक्षिकाओं को कक्षा में रोज़मर्रा की स्थितियों से उभरी अपनी ज़रूरतों को अभिव्यक्त करने का मौक़ा मिला है।

बैठकों की कार्यवाही की एक विस्तृत व औपचारिक रपट बनाई जाती है और उसे ब्लॉक व ज़िला स्तर के अधिकारियों से साझा किया जाता है। समन्वयक इन रपटों का इस्तेमाल पिछली चर्चाओं को संक्षेप में दोहराने के लिए एक सन्दर्भ की तरह कर सकते हैं और साथ ही, शिक्षक–शिक्षिकाओं से पिछली बैठक में सीखी बातों को कक्षा में लागू करने के अनुभवों पर फ़ीडबैक भी लेते हैं। दस्तावेज़ीकरण से इन क्रियाकलापों से मिले सबक़ और समझ को एक लिखित व व्यवस्थित स्वरूप देने में मदद मिलती है, जिसे दूसरों के साथ आसानी से साझा किया जा सकता है।

गुणवत्ता सुनिश्चित करना

शिक्षक–शिक्षिकाओं के मिल जुलकर सीखने के मंच कितने प्रभावशाली होंगे, यह अन्ततः वहाँ होने वाले संवादों की गुणवत्ता व गम्भीरता और कक्षा के क्रियाकलापों के लिए उनकी प्रासंगिकता पर निर्भर करता है। बैठक में होने वाली चर्चाएँ रचनात्मक हों, यह सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी है कि विषयवस्तु प्रासंगिक हो, सन्दर्भ व्यक्तियों में अकादमिक विशेषज्ञता हो और चर्चाएँ परस्पर क्रियाकलाप पर आधारित हों, जिनमें शिक्षक–शिक्षिकाएँ ज्ञान के सामूहिक निर्माण में भाग लेने के लिए प्रेरित किए जाएँ।

आमतौर पर बैठकें दो से चार घण्टे तक चलती हैं। सत्र अक्सर विभिन्न विषयों के अलग–अलग मुद्दों पर केन्द्रित होते हैं, मिसाल के लिए, अंग्रेजी व्याकरण कैसे सिखाएँ, कक्षा में ग्लोब का इस्तेमाल किस तरह करें, या फिर विशिष्ट टीएलएम (शिक्षण–अधिगम सामग्री) जैसे कि गणित की किट का उपयोग कैसे करें। इसके अलावा, सत्रों में व्यापक मुद्दों या नीतियों पर भी बातचीत सम्भव है, जैसे सीसीई या 'बाल शोध मेला' का आयोजन। कुछ सत्रों में उन मॉड्यूलों का फ़ॉलोअप भी किया जाता है जो शिक्षा विभाग द्वारा साल में एक बार आयोजित शिक्षक–शिक्षिकाओं के विषयवार प्रशिक्षण में पढ़ाए जाते हैं। सत्रों की योजना इस तरह बनाई जाती है कि हर बैठक अपने आप में पूर्ण हो ताकि एक भी बैठक में उपस्थित होने वाले शिक्षक–शिक्षिकाएँ भी उससे लाभ उठा सकें, कुछ मूल्यवान सीख हासिल कर सकें और आगे की बैठकों में भाग लेने के लिए प्रेरित हो सकें।

कक्षा से सम्बन्ध बनाना

दूसरे वयस्क शिक्षार्थियों की ही तरह शिक्षक–शिक्षिकाएँ भी उन विषयों में ज़्यादा रुचि रखते हैं जो उनके जीवन से सीधे–सीधे जुड़े होते हैं। इसे देखते हुए पेशेवर विकास के अवसरों का प्रासंगिक होना ज़रूरी हो जाता है। इनकी प्रासंगिकता को स्थापित करने व उसे बनाए रखने के लिए स्कूलों का दौरा करना ज़रूरी होता है क्योंकि इससे शिक्षक–शिक्षिकाओं के अनुभव और सीखने–सिखाने की चुनौतियाँ सामने आती हैं। इसलिए, शिक्षक–शिक्षिकाओं की चिन्ताओं को समझने और उनसे व्यक्तिगत जुड़ाव बनाने के लिए स्कूलों के दौरे करना समन्वयक के लिए ज़रूरी है। यह दौरे शिक्षक–शिक्षिकाओं से आमने–सामने बातचीत करके उनको संकुल स्तरीय बैठकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का मौक़ा देते हैं।

स्कूल के दौरों से सीआरसी समन्वय कों को उन जटिल परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अनुभव होता है जिनमें शिक्षक–शिक्षिकाएँ काम करते हैं। यह अनुभव संकुल–स्तरीय बैठकों में उनके अकादमिक एजेण्डा और संवादों पर असर डालते हैं। इसके अलावा, स्कूल दौरों के दौरान जो मुद्दे सामने आते हैं उन पर मासिक बैठकों में चर्चा होती है। वहाँ दूसरे प्रति भागी उनके बारे में अपनी राय ज़ाहिर करते हैं और इससे जो समझ बनती है उसे कक्षा में लागू किया जाता है।

अधिकार और संवाद की गुंजाइश

शिक्षक–शिक्षिकाओं को अपने पेशेवर विकास पर अधिकार दिए जाने की ज़रूरत है। सीखने की योजना के निर्माण और उसके क्रियान्वय न में शामिल किए जाने पर शिक्षक–शिक्षिकाएँ न सिर्फ़ अपने पेशेवर विकास की ज़िम्मेदारी लेने की क्षमता रखते हैं बल्कि ऐसा करके भी दिखाते हैं। फ़ैसले लेने की साझी प्रक्रियाएँ और मिलाजुला नेतृत्व, यह संकुल–स्तरीय बैठकों के ढाँचे की पहचान है। शिक्षक–शिक्षिकाओं को दोनों स्तरों पर शामिल किया जाता है– विषयवस्तु के स्तर पर भी, और प्रक्रियाओं के स्तर पर भी। इससे न सिर्फ़ शिक्षक–शिक्षिकाओं की भागीदारी बढ़ी है बल्कि उन्होंने इन बैठकों से जुड़े विभिन्न कार्यों की ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ भी ली हैं, मसलन, सालाना अकादमिक योजना बनाना, एजेण्डा तय करना, सत्रों का संचालन करना, चर्चा ओं में खुलकर भाग लेना आदि।

बेहतर माहौल बनाना

संकुल बैठकों के व्यापक कामकाज को देखते हुए अनुकूल भौतिक वातावरण का मुद्दा छोटा लग सकता है। लेकिन, यह बेहद ज़रूरी कारक है क्योंकि सुविधाजनक जगह का चयन और वहाँ बैठक के लिए साफ़–सुथरा व आरामदायक माहौल बनाने से शिक्षक–शिक्षिकाएँ इस मंच की तरफ आकर्षित होते हैं। दरअसल, इससे यह दिखता है कि उनकी ज़रूरतों को समझा जाता है और उनकी इज़्ज़त की जाती है। संकुल संसाधन केन्द्रों का कायाकल्प करना ताकि वे ऐसी जगह बन सकें जहाँ शिक्षक–शिक्षिकाएँ जाने के इच्छुक हों। जब संकुल–स्तरीय बैठकों में शामिल होने लगे, तब सीआरसी समन्वय कों के साथ काम कर रहे सदस्यों ने वातावरण को बेहतर बनाने की कोशिशें कीं। उन्होंने शिक्षक–शिक्षिकाओं के आराम का भी ध्यान रखना शुरु किया और यह सुनिश्चित किया कि उनके बैठने के लिए आरामदायक व्यवस्था हो। इन कोशिशों से वह जगह शिक्षक–शिक्षिकाओं के लिए ज़्यादा आकर्षक बन गई।

निष्कर्ष

संकुल संसाधन केन्द्र व ब्लॉक संसाधन केन्द्रों की अवधारणा ऐसे स्थानीय संस्थागत ढाँचों के रूप में की गई है, जो शिक्षक–शिक्षिकाओं को सतत पेशेवर समर्थ न मुहैया कराते हों। लेकिन, विभिन्न कारणों से, यह केन्द्र स्कूलों व ज़िला शिक्षा विभाग के बीच विकेन्द्री करण की महज़ एक और परत बनकर अपने मूल उद्देश्यों को हासिल करने से चूक गए हैं। संकुल बैठकों को शिक्षक–शिक्षिकाओं के विकास के पेशेवर मंच के रूप में विकसित कर पाना एक सतत प्रक्रिया है। इसके लिए समय, धैर्य और टिकाऊ व विविध प्रकार के ज़मीनी प्रयासों की ज़रूरत होती है। इन बैठकों का अन्तिम लक्ष्य यह है कि शिक्षक–शिक्षिकाएँ इन मंचों की सारी ज़िम्मेदारी अपने हाथ में लेकर ख़ुद ही इसके प्रति भागी, संचालक व अधिकारी बन जाएँ। इन चुने हुए संकुलों में भी इस लक्ष्य को पूरी तरह हासिल करने के लिए एक लम्बा फ़ासला तय करना है।

संदर्भ

1. शिक्षक शिक्षण के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षण परिषद, 2009
2. रोल ऑफ़ ब्लॉक एण्ड क्लस्टर रिसोर्स सैण्टर्स इन प्रोवाइडिंग एकेडेमिक सपोर्ट टू एलिमैण्ट्री स्कूल्स, रिसर्च 2010
3. स्कूल क्लस्टर्स एण्ड टीचर रिसोर्स सैण्टर्स, एलिज़ाबेथ, जिओर्दानो, यूनेस्को : इण्टरनैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन प्लानिंग, पेरिस, 2008
4. क्रियान्वयन की रूपरेखा, 2011, सर्व शिक्षा अभियान।
5. एजुकेशन रिफ़ॉर्म एण्ड फ्रण्टलाइन एडमिनिस्ट्रेटर्सः ए केसस्टडी फ्रॉम बिहार–2, यामिनी अय्यर, विन्सी डेविस व अम्बरीश डोंगरे; आइडियाज़ फ़ॉर इण्डिया 2015